BA Part- I
(GEN/SUB)

Dr. Chiranjeev Kr Thakur
Assistant Professor (GT)
Department of Sociology
VST College, Rajnagar

समाजशास्त्र के उपयोग (Uses of Sociology) → समाजशास्त्र की उपयोगिता समाज के सभी क्षेत्रों में देखने को मिलता है। भारत जैसे विकासशील देश में समाजशास्त्र के अध्ययन का विशेष महत्व है। समाज में अनेक प्रकार सामाजिक समस्याएं है उनका अध्ययन करना एवं उनके समाधान के लिए रूपरेखा तैयार करना समाजशास्त्र की उपयोगिता है। समाजशास्त्र के उपयोग को निम्न शीर्षकों के माध्यम से व्यक्त कर सकते है —

① सम्पूर्ण मानव समाज के बारे में वैज्ञानिक ज्ञान प्रदान करने में सहायक → समाजशास्त्र एक सामान्य विज्ञान है जो किसी विशिष्ट समाज के अध्ययन तक सीमित नही है बल्कि सम्पूर्ण मानव समाज के बारे में वैज्ञानिक रूप से अध्ययन करने वाला सा० विज्ञान है। इसके द्वारा सम्पूर्ण मानव समाज को व्यवस्थित रूप से समझा जा सकता है। समाजशास्त्र के द्वारा समाज में बदलती हुई सामाजिक संरचना के सम्बन्ध में भी अध्ययन किया जा सकता है।

(2) नवीन सामाजिक परिस्थितियों से अनुकूलन करने में सहायक → समाजशास्त्र बदलती हुई परिस्थितियों में व्यक्ति के अनुकूलन को सरल बनाता है। व्यक्ति विभिन्न समूह एवं समाजों के तुलनात्मक अध्ययन से प्राप्त ज्ञान की सहायता से बदलती हुई परिस्थितियों में आसानी से समायोजन कर पाता है। समाजशास्त्र व्यक्ति को विभिन्न समुदायों, संस्थाओं, संघों एवं समूहों के सम्बन्ध में ज्ञान प्रदान करता है और साथ ही सामाजिक जीवन को प्रभावित करने वाली विभिन्न दशाओं से उसे परिचित कराता है।

(3) समाज में सह-अस्तित्व की भावना का प्रसार करने में सहायक → समाजशास्त्र विभिन्न संस्कृतियों, समूहों, समाजों के सम्बन्ध में वैज्ञानिक दृष्टिकोण प्रदान करता है। यह समाज में सहअस्तित्व की भावना का विस्तार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। समाजशास्त्रीय ज्ञान के आधार पर यह प्रमाणित हो चुका है कि प्रजातीय श्रेष्ठता का सिद्धान्त अवैज्ञानिक एवं भ्रामक है और सभी प्रजातियाँ अपने आप में श्रेष्ठ हैं।

(4) परम्पराओं के अध्ययन में सहायक → किसी भी समाज की संस्कृति को समझने के लिए यह आवश्यक है कि हम समाज की परम्पराओं को समझें। समाजशास्त्र द्वारा परम्पराओं के अध्ययन के द्वारा समाज को समझा जा सकता है।

(5) राष्ट्रीय एकता में सहायक ⇒ भारत देश अनेक समूहों आधारों, धर्म, प्रान्त, जाति के आधार पर विभिन्न स्वार्थ समूहों में विभक्त है। समाजशास्त्र भाषावाद, जातिवाद, सम्प्रदायवाद, क्षेत्रवाद आदि के विषय में अध्ययन करके यथोचित सूचना प्राप्त करता है और व्यक्ति को उपरोक्त दृष्टिकोण को अपनाने में सहायक सिद्ध होती है। अतः समाजशास्त्र राष्ट्रीय एकता में सहायक सिद्ध होती है।

(6) सामाजिक समस्याओं को हल करने में सहायक
⇒ आज समाज जटिल होता जा रहा है जिसमें कई तरह की समस्याएं उत्पन्न होने लगी है। जैसे बेकारी, बाल विवाह, भाषावाद, जातिवाद, अपराध, बाल अपराध, चिंतन, मद्यपान, इन समस्याओं के समाधान के लिए इसका अध्ययन आवश्यक है ताकि सही विधा समझ में आये और सही समाधान खोजा जा सके।

(7) व्यावहारिक सामाजिक समस्याओं के निराकरण में सहायक
⇒ वर्तमान समय में अनेक व्यावहारिक समस्याएं समाज रूपी शरीर को रोग-ग्रस्त किये हुए है। आज समाज में अपराध, बाल अपराध, श्वेतवसन अपराध, औद्योगिक काला बाजारी आदि अनेक व्यावहारिक समस्याएं पायी जाती है

समाजशास्त्री अपने सैद्धान्तिक ज्ञान के आधार पर इन समस्याओं के कार्य - कारण सम्बन्धों का पता लगाने में सफल हुए हैं।

(8) श्रम समस्याओं के निराकरण में सहायक => आज औद्योगीकरण तेजी से बढ़ रहा है साथ ही अनेक प्रकार के श्रम समस्याएँ भी सामने आ रही हैं। पूँजीपति और श्रमिक वर्ग के हित एक दूसरे से टकराते हैं। आज अनेक औद्योगिक समस्याएं हैं जैसे हड़ताल, घेराव, तालाबन्दी, श्रमिक तनाव, काम की अस्वास्थ्यकर दशाएं, कार्यशील महिलाओं की समस्याएं आदि। इन समस्याओं के समाधान में समाजशास्त्र अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

(9) नगरीय विकास में सहायक => वर्तमान समय में औद्योगीकरण की तेज गति के कारण नगरीकरण की प्रक्रिया भी काफी तेजी से चल रही है। शिक्षा, मनोरंजन, चिकित्सा सुविधा कचहरी, उद्योग-धन्धे और विभिन्न सुविधाएं ग्रामीणों को नगरों की ओर आकर्षित करती जा रही है। फलस्वरूप नगरीकरण बढ़ता जा रहा है। इसका अध्ययन समाजशास्त्र करता है।

(10) ग्रामीण पुनर्निर्माण मे सहायक

11) सामाजिक नियोजन में सहायक

12) प्रजातन्त्र को सफल बनाने में समाजशास्त्र का योगदान।